पौष-चैत्र, वि.सं. २०८०
अप्रैल-जून, 2024

ISSN : 0378-391X
भाग-85, अंक: 2
यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

शताब्दी की ओर

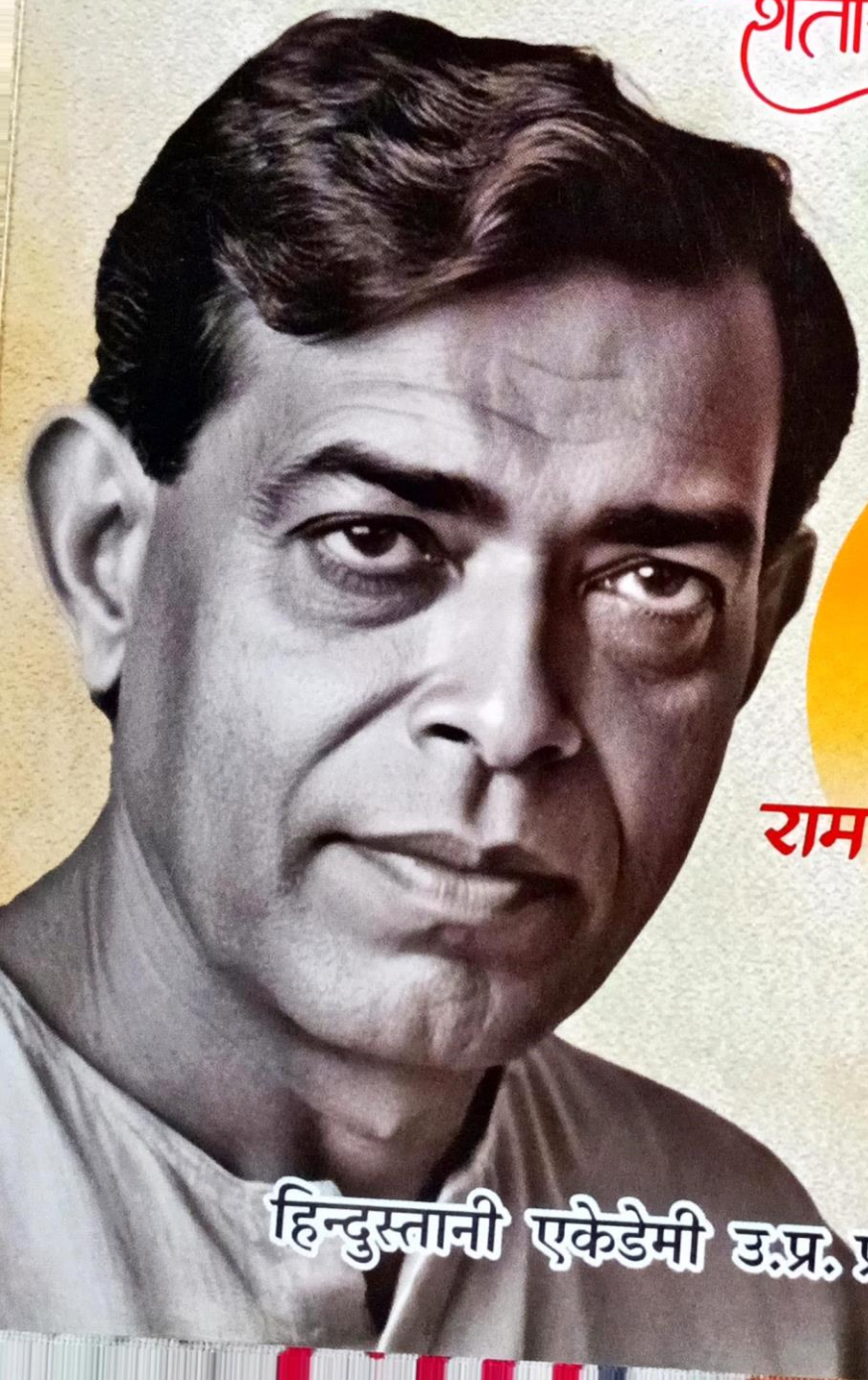

रामधारी सिंह 'दिनकर' विशेषांक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज

अनुक्रम

- **सम्पादकीय** ... 5
- **आलेख**
  - दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय-जागरण – सभापति मिश्र 7
  - 'कुरुक्षेत्र' : राष्ट्रकवि दिनकर की युद्ध और शांति संबंधी वैचारिकी – सुनीता रानी घोष 13
  - रामधारी सिंह दिनकर और उनका क्रांतिधर्मी काव्य – सुरेन्द्र प्रताप 17
  - संस्कृति के चार अध्याय-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की मुखर अभिव्यक्ति – एम0 पी0 सिंह 20
  - रामधारी सिंह 'दिनकर' और उनकी 'परशुराम की प्रतीक्षा' – इन्द्रमणि कुमार 26
  - दिनकर और टैगोर की कविताओं में भारतबोध – राजेश कुमार गर्ग 32
  - परिवर्तनकामी चेतना के कवि दिनकर – चित्तरंजन मिश्र 36
  - कामअध्यात्म और दिनकर की ऊर्वशी – इंदीवर 41
  - बाल-काव्य और राष्ट्रकवि दिनकर – भगवती प्रसाद द्विवेदी 48
  - 'दिनकर' के संस्मरणों और यात्रा साहित्य में संस्कृतियों का समावेश –कमल कुमार 51
  - दिनकर की काव्य संबंधी मान्यताएँ : मिटटी की ओर – हरदीप सिंह 57
  - परशुराम की प्रतीक्षा में इतिहास और वर्तमान – श्रीकांत द्विवेदी 61
  - सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता रामधारी सिंह 'दिनकर' – प्रतीची मालवीय 66
  - रामधारी सिंह 'दिनकर' के काव्य में राष्ट्रीय चेतना – प्रीति सिंह 70
  - दिनकर में राष्ट्रीय नवोत्थान का स्वर – मुरारजी त्रिपाठी 74
  - दिनकर के साहित्य में कला, संस्कृति और सद्भाव – जूही शुक्ला 77
  - 'रेती के फूल' : वैयक्तिक अभिव्यक्ति एक समीक्षात्मक अध्ययन – मोनिका चौहान 82
  - सांस्कृतिक अंतर्विरोध और समरसता : संसदीय लोकतंत्र पर रामधारी सिंह दिनकर के विचारों का पुनरवलोकन – चन्द्रजीत सिंह यादव 85
  - सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत कवि रामधारी सिंह दिनकर – चंद्रकांत सिंह 90
  - राष्ट्र निर्माण में दिनकर जी का काव्य – नीलम सिंह 94
  - परशुराम की प्रतीक्षा' में व्यक्त रामधारी सिंह 'दिनकर' की राष्ट्रीय चेतना – मधुकर राय 98
  - रामधारी सिंह दिनकर का काव्य उर्वशी : एक मूल्यांकन – अनिल कुमार सिंह 102
  - नारी भीतर नारी – विशेष संदर्भ : उर्वशी – अनूप कुमार 107
  - दिनकर के गद्य साहित्य में सांस्कृतिक चेतना के ओजस्वी स्वर – नीलाक्षी जोशी 110
  - उर्वशी में प्रेम का स्वरूप एवं मनोवैज्ञानिक प्रतीकात्मकता – सलमा खातुन 114
  - रामधारी सिंह 'दिनकर' के रचना-संसार का वैशिष्ट्य – नन्दराम 118
  - अप्रतिम व्यक्तित्व : दिनकर –विवेक सत्यांशु 123
  - सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक कवि रामधारी दिनकर – शिवनाथ मिश्र 126
  - दिनकर की 'उर्वशी' : मिथकीय संचेतना, प्रतिपाद्य एवं जीवन-दर्शन – रुचि बाजपेई 131
  - दिनकर की काव्य सर्जना में राष्ट्रीयता और जनाधिकार का महाराग – संदीप कुमार मिश्र 137
  - रामधारी सिंह 'दिनकर' का यात्रा साहित्य : एक अनुशीलन – गुँजा आनंद 140

सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत कवि रामधारी सिंह दिनकर

चंद्रकांत सिंह

संस्कृति जीवन की तराश है, जीवन के सुन्दर फूलों की सुवास संस्कृति की छतनार लतर में देखी जा सकती है। मनुष्य ने कितनी ही प्रगति क्यों न कर ली हो किन्तु यदि आत्मिक प्रगति न हुई हो सारी बाह्य प्रगति बेमानी है। संस्कृति जीवन-बोध है जिस पर बात करते हुए रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं– "संस्कृति अहंकार नहीं विनय है, संस्कृति जीत नहीं समझौता और मैत्री का नाम है। एक दूसरे धरातल पर संस्कृति विचार है, संस्कृति भावना है। संस्कृति मनुष्य का जीवन-व्यापी दृष्टिकोण है। हम जैसे विचारों में विश्वास करते हैं हमारे विचार वैसे ही हो जाते हैं। संस्कृति न केवल निवृत्ति है न केवल प्रवृत्ति है। संस्कृति दुराग्रह नहीं सहनशीलता को कहते हैं। संस्कृति युद्ध नहीं समझौते का नाम है।"[2]

भारतीय संस्कृति में भारतीय ज्ञान-चेतना के दर्शन होते हैं। नैतिक एवं आध्यात्मिक रूप से भारत ने जो कुछ भी अर्जित किया है वह सब भारतीय संस्कृति में परिलक्षित होता है। 'शिक्षा और संस्कृति' नामक अपनी रचना में डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय ने भारत एवं भारतीय संस्कृति के संदर्भ में सही लिखा है कि– "विश्वमैत्री का आकांक्षी, विश्व शान्ति का संस्थापक, सहिष्णुता का अधिष्ठाता, वसुधैव कुटुम्बकम का हिमायती, आर्य संस्कृति का प्रणेता, भारत सांस्कृतिक चेतना को जागरूकता के साथ मुखरित करने में प्रयत्नशील है। सिद्धांतों से भारत कभी भी पीछे नहीं हटा। जीवनादर्शों में भी भारत विश्व का आदर्श रहा है। अपनी शिक्षा और संस्कृति के बल पर ही भारत न केवल विश्व का गुरु कहलाया बल्कि प्रगतिशील राष्ट्रों के प्रति स्पर्धा में भी अग्रणी है।"[2]

निःसंदेह भारतीय संस्कृति बहुलतावादी दृष्टिकोण को दर्शाती है। किसी को पराजित करने या पराभूत करने की आकांक्षा यहाँ नहीं दिखती वरन दूसरों के लिए स्वयं को उत्सर्ग करने की भावना यहाँ की मूल भावना रही है। प्रख्यात राजनीतिज्ञ राजनाथ सिंह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि– "संस्कृति का अर्थ होता है सम्यक कृति। सम्पूर्ण जीवन कर्म का सत्य, शिव और सौन्दर्य ही हमारी संस्कृति है। प्राचीन परम्परा का संस्कार शब्द ही सामूहिक कर्म के रूप में भारतीय संस्कृति है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय राष्ट्रीय जीवन मूल्यों का समुच्चय है। सम्पूर्ण सत्य, सम्पूर्ण शिव और सम्पूर्ण सुन्दर इसमें खिलता है। यह वोट की राजनीति का खेल नहीं है। इसमें गांधीवादी समाजवाद शामिल है। इसमें भारत के आदर्श रामराज्य की अवधारणा है। यह मजहबी राज्य की कल्पना से पृथक स्वाभाविक लोकतांत्रिक अवधारणा है। यह किसी के विरुद्ध नहीं है। सबके साथ है। सब इसमें समाहित हैं।"[3]

भारतीय संस्कृति में किसी के धन एवं ऐश्वर्य को बलात आकृष्ट करने का बोध नहीं है बल्कि दूसरों के हित में स्वयं का बलिदान करने की भावना अनस्यूत है। राष्ट्र कवि दिनकर ने अपनी काव्य-कृति 'उर्वशी' में पुरूरवा के माध्यम से भारतीय मनीषा की विशेषताओं को उद्घाटित किया है। पुरूरवा के प्रखर विचारों में भारतीय चेतना का भास्वर स्वर दिखता है। यहाँ भारतीय संस्कृति के औदात्य स्वरूप की झलक मिलती है। पुरूरवा कहता है–

> नहीं बढ़ाया कभी हाथ पर के स्वाधीन मुकुट पर,
> न तो किया संघर्ष कभी पर की वसुधा हरने को।
> तब भी प्रतिष्ठानपुर वन्दित है सहस्र मुकुटों से,
> और राज्य-सीमा दिन-दिन विस्तृत होती जाती है।
> इसी भाँति, प्रत्येक सुयश, सुख, विजय, सिद्धि जीवन की
> अनायास, स्वयमेव प्राप्त मुझको होती आयी है।[4]